हिन्दी प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष, पत्र- 3

'उसने कहा था' कहानी का केंद्रीय भाव।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने हिंदी गद्य की अनेक विधाओं में सृजन किया है। विशेषरूप से उनकी पहचान तथा ख्याति एक कथाकार के रूप में हुई है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी ऐसे अकेले कथाकार थे जिन्होंने मात्र तीन कहानियां लिखकर कथा साहित्य को नई दिशा और आयाम दिया। उनकी लिखी तीन कहानियां ही प्रमाणिक तौर पर उपलब्ध हैं- 'सुखमय जीवन', 'बुद्धू का काटा', और 'उसने कहा था'। उसने कहा था सन् 1915 ई. में सरस्वती पत्रिका में छपी थी। गुलेरी जी की उसने कहा था शीर्षक कहानी हिंदी की पहली सर्वोत्तम कहानी मानी जाती है। यह कहानी प्रेम, शौर्य और बलिदान की अद्भुत गाथा है। उसने कहा था कहानी आज भी उतनी ही नवीन और तरोताजा है जितनी अपने समय में रही थी। इस कहानी का प्रमुख पात्र लहना सिंह है जो बारह वर्ष की छोटी अवस्था में अमृतसर की सड़कों पर एक आठ वर्षीय लड़की की जान बचाने के लिए अपने जान की बाजी लगा देता है। दो-तीन दिनों की मुलाकात में ही उस लड़की के प्रति उसकी अगाध प्रीति इस प्रकार जन्म ले लेती है कि पचीस वर्ष बाद वही लड़की जब उसे सूबेदारनी के रूप में मिलती है तो उसके द्वारा दिए गए वचन को पूरा करने के लिए यानी उसके पति और बेटे की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध होकर वह मृत्यु के गाल में समा जाता है। पांच खंडों और पच्चीस वर्षों के लंबे अंतराल में खुद को समेटे हुए यह कहानी प्रेम, कर्तव्य और देशप्रेम के मूल उद्देश्यों से जुड़ी हुई है। उसने कहा था प्रथम विश्वयुद्ध के तुरंत बाद लिखी गई कहानी है जिसमें फ्रांस में जर्मनी से लड़ते हुए भारतीय सिपाही का वर्णन किया गया है। लहना सिंह ने अपनी समझ और सूझबूझ के कारण जर्मनी सेना द्वारा भारतीय टुकड़ी को धोखा देने की चेष्टा को विफल करते हुए सभी सिपाहियों की जान बचाई। सूबेदारनी अपने पति और पुत्र हजारा सिंह तथा बोधा सिंह की रक्षा के लिए लहना सिंह से अनुरोध करती है कि, बरसों पहले तुमने मुझे घोड़े के टाप से बचाया था इस बार भी मेरी सहायता करना मेरे पति और पुत्र दोनों युद्ध में जा रहे हैं इनकी रक्षा करना। लहना सिंह अपने प्राण देकर बोधा सिंह और हजारा सिंह के प्राणों की रक्षा करता है। ऐसे लहना सिंह ने सूबेदारनी के मात्र उसने कहा था वाक्य को ध्यान में रखकर प्राण उत्सर्ग किया जो इस कहानी को 'उसने कहा था' शीर्षक की सार्थकता प्रदान करता है। इस पूरी कहानी का कथानक लहना सिंह के त्याग और बलिदान पर आधारित है। उसने कहा था कहानी कला की दृष्टि से एक बहुत ही सफल कहानी है। जिसमें लहना सिंह के माध्यम से गुलेरी जी ने निश्छल प्रेम, प्रण-पालन, त्याग और बलिदान आदि का संदेश दिया है। इस कहानी में पहली बार फ्लैशबैक शैली का प्रयोग किया गया है जिसमें लहना सिंह के द्वारा पूर्व की घटनाओं को याद किया जाता है। इसके पहले हिंदी कहानी में फ्लैशबैक शैली का प्रयोग नहीं मिलता है। डॉ. नगेंद्र ने उनकी कहानियों पर अपनी टिप्पणी देते हुए 'उसने कहा था' को हिंदी की सर्वश्रेष्ठ कहानी माना है। मधुरेश ने इनकी कहानी की समीक्षा करते हुए लिखा है कि उसने कहा था वस्तुतः हिंदी की पहली कहानी है जो शिल्प विधान की दृष्टि से

हिंदी कहानी को एक झटके में प्रौढ़ बना देती है। प्रेम बलिदान और कर्तव्य की भावना से अनेक कहानियां लिखी गई हैं परंतु यह कहानी अपनी मानसिकता और संगठन के कारण आज भी अद्वितीय बनी हुई है। हिंदी कहानी के आरंभ काल में ही ऐसी श्रेष्ठ रचना का प्रकाशित होना एक महत्वपूर्ण घटना है।

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ.बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय ।